राशिपातन (Dumping)

कीमत विभेद का एक विशिष्ट उदाहरण राशिपातन है जिसके अन्तर्गत एकाधिकारी के दो बाजार होते हैं जिनमें से एक में उसका एकाधिकार होता है और दूसरों में उसे एक अन्य प्रतिद्वंद्वियों का मुकाबला करना पड़ता है।

उदाहरण के लिए, उसे देश के अंदर एकाधिकार प्राप्त हो परंतु विदेशों में उसे प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है ऐसी परिस्थिति में सामान्य एकाधिकारी अपनी वस्तु को विदेशी मंडी में से नीचे की कीमत पर बेचकर एक आधिकारिक लाभ को अधिकतम करता है।

राशिपातन देसी और विदेशी बाजारों के ही संदर्भ में नहीं होता है क्योंकि यह संभव है कि एकाधिकारी को कोई सुरक्षित बाजार प्राप्त हो जहाँ एक अधिक कीमत पर वस्तु बेचता और उसका दूसरा बाजार असुरक्षित हो सकता हो। जहाँ पर वह वस्तु कम कीमत पर बेचता हो इस स्थिति को भी **राशिपातन** ही कहा जाता है।

वस्तुत: जिस बाजार में वस्तुओं की नीची कीमत पर बेचा जाता है, उसमें **राशिपातन** होता है।

यह एकाधिकार की एक विशिष्ट अवस्था है जिसमें एकाधिकारी के पास दो बाज़ार क्रमशः संरक्षित एवं अरक्षित होते हैं। इनमें से पहले बाजार में उसका एकाधिकार होने के कारण वह उचित कीमत तथा दूसरी बाजार में अन्य प्रमुख के साथ प्रतिस्पर्धा होने के कारण निम्न कीमत या कम कीमत लेता है

राशिपातन के उद्देश्य

अधिक उत्पादन

राशिपातन का प्रयोग अतिरिक्त उत्पादन को बेचने के लिए किया जाता है। कभी कभी एकाधिकारी द्वारा मांग का गलत अनुमान लगाने के कारण वस्तुओं का उत्पादन बहुत अधिक हो जाता है ऐसी दशा में उत्पादन अतिरिक्त उत्पादन को विदेशी बाजार में कम कीमत पर बेच सकता है

प्रतियोगिता को समाप्त करना

राशि पातन का दूसरा उद्देश्य यह हो सकता है कि असुरक्षित मंडी में नीची कीमत पर वस्तु बेची जाए ताकि प्रतियोगी विक्रेताओं को बाजार से निकाला जा सके

प्रतियोगिता का विस्तार

एकाधिकारी राशिपातन का प्रयोग बढ़ते हुए प्रतिफल का लाभ उठाने के लिए कर सकता है। एकाधिकारी अपने उत्पादन का विस्तार करके घटती हुई लागत को प्राप्त कर सकता है और बढ़ी हुई उत्पादन की मात्रा को विदेशी बाजार में बेच सकता है

उपयुक्त दशाओं में उपलब्धता

राशिपातन इसलिए भी किया जा सकता है क्योंकि कीमत विभेद के लिए उपयुक्त दशाएं उपलब्ध हैं, जैसे देशी बाजार की तुलना में विदेशी बाजार में वस्त्रों की मांग का अधिक लोचदार होना

राशिपतन की अवधि

ऊपर वर्णित चार में से पहली दो दशाओं में राशिपातन अस्थायी होता है प्रथम दशा में राशिपातन अतिरिक्त उत्पादन के जाने पर समाप्त हो जाएगा और दूसरी दशा मेँ यह उस समय समाप्त हो जाएगा जबकि प्रतिद्वंद्वी समाप्त हो जाएंगे परंतु अंतिम दशा में राशि बदलने के लंबे समय तक हो सकता है और ये स्थायी भी बन सकता है

राशिपातन के अंतर्गत कीमत निर्धारण

जब कोई भी एकाधिकारी राशिपातन की स्थिति में होता है तो उसके पास दो बाजार होते हैं:-

- पहला उसका अपना घरेलू बाजार जहाँ उसका एकाधिकार रहता है
- दूसरा विदेशी बाजार जहाँ उसे प्रतियोगिता का सामना करना पड़ता है

पहले बाजार को संरक्षित घरेलू बाजार (Protected Home Market) तथा दूसरे बाजार को प्रतिस्पर्धी या अरक्षित विदेशी बाजार (Competitive Unprotected Foreign Market) कहा जाता है।

वास्तविक जीवन में उक्त दोनों में से कोई भी एक बाजार संरक्षित या दूसरा अरक्षित हो सकता है परन्तु अरक्षित बाजार में एकाधिकारी अपनी वस्तुओं का ऊंचा मूल्य लेने में सफल नहीं हो सकता वहाँ पर कम कीमत तथा संरक्षित बाजार में इसी वस्तु को ऊंची कीमत निर्धारित करता है। जिस बाजार में एक अधिकारी कम कीमत लेता है उसे राशिपातन कहते हैं

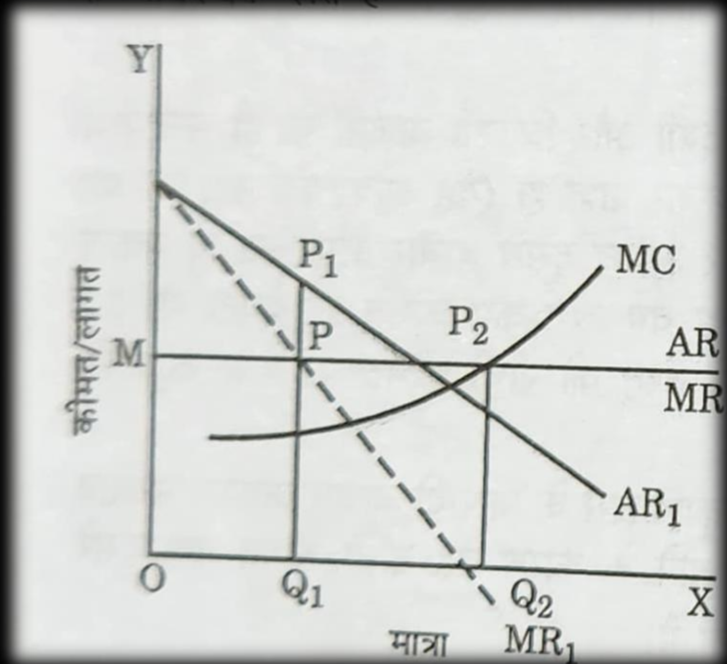

राशिपातन की आवश्यक शर्तें

- राशिपातन तभी संभव हो सकता है जबकि एकाधिकारी के पास कम से कम एक बाजार संरक्षित और दूसरा आरक्षित हो
- संरक्षित बाजार में मांग की कीमत लोच असंरक्षित बाजार की तुलना में कम हो

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

LIKE & SHARE

The Video

And

SUBSCRBE

YouTube CHANNEL

THE ECONOMICS GURU

FOLLOW ME ON INSTAGRAM / @theeconomicsguru

FOLLOW ME ON FACEBOOK / NAKUL DHALI

For PDF visit my website: www.theeconomicsguru.com